DR. ANWAR ALAM
UG HISTORY (HONS) SEM-VI
PAPER-CC-14.

Date
Page No. 1

IMPORTANCE OF GLOBALIZATION
भूमण्डलीकरण (वैश्वीकरण) के महत्व

"भूमण्डलीकरण शब्द मूल रुप से 'भूमंडल' शब्द से बना है। 'भू' का अर्थ है भूमि, पृथ्वी तथा 'मण्डल' का अर्थ है परिधि। इस प्रकार भूमण्डलीकरण का अर्थ हुआ- पृथ्वी की परिधि करना।

भूमण्डलीयकरण वह प्रक्रिया है जिसकी सहायता से व्यवसायी अपने व्यवसाय को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाते हैं। इससे व्यवसाय एक देश से बढ़कर कई देशों तक पहुंचता है या इसे ये भी कह सकते हैं कि 'भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में देश एक दूसरे पर, परस्पर निर्भर हो जाते हैं और लोगों के बीच की दूरियाँ घट जाती हैं। एक देश अपने विकास के लिए दूसरे देशों पर निर्भर करता है। भूमण्डलीकरण में केवल वस्तुओं और पूंजी का ही संचलन नहीं होता है बल्कि लोगों का भी संचलन होता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अगर देखा जाये तो भूमण्डलीकरण कोई नयी चीज़ नहीं है। लगभग 200ई० पू० से 1000ई० तक पारस्परिक क्रिया और लंबी दूरी तक व्यापार सिल्क रुट के माध्यम से हुआ करता था। सिल्क रुट मध्य और दक्षिण पश्चिम एशिया में लगभग 6000 कि० मी० तक फैला हुआ था और चीन को भारत, पश्चिमी एशिया तथा भूमण्डलीय क्षेत्र से जोड़ता था। सिल्क रूट के साथ वस्तुओं, लोगों और विचारों ने चीन, भारत और यूरोप के बीच हजारों कि० मी० की यात्रा की। 1000 ई० से 1500 ई० तक एशिया में लंबी लंबी यात्राओं द्वारा लोगों में वैचारिक आदान प्रदान होता रहा। इसी दौरान हिंद महासागर में समुद्रीय व्यवस

Teacher's Signature.....

को महत्व मिला। साथ ही दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया के बीच स्थलीय मार्ग का विस्तार हुआ। केवल वस्तुओं और लोगों ने ही नहीं बल्कि प्रौद्योगिकी ने भी विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक की यात्रा की। इस अवधि में भारत न केवल शिक्षा एवं अध्यात्म का केन्द्र था बल्कि धन दौलत का भी अपार भंडार था। जिससे आकर्षित होकर विश्व के अन्य भागों से व्यापारी और यात्री यहाँ आए। चीन में मंगोल शासन के दौरान कई चीनी वस्तुएँ जैसे बारूद, छपाई, रेशम की मशीनें, कागज की मुद्रा और ताश यूरोप में पहुँचे। वास्तव में इन्हीं व्यापारिक संबंधों ने आधुनिक भूमंडलीकरण का बीजारोपण किया। भूमण्डलीकरण के प्रारंभिक रुपों में भारत का कपड़ा, इंडोनेशिया और पूर्वी अफ्रीका के मसाले, मलाया का टिन और सोना, जावा का बाटिका और गलीचे, जिंबाबवे का सोना तथा चीन का रेशम, पोर्सलीन और चाय ने यूरोप में प्रवेश किया। यूरोप के लोगों की अपने स्त्रोतों के दर्शन की उत्सुकता ने यूरोप में अन्वेषण के युग का प्रारंभ किया। अतः पश्चिम के तत्वानधान में आधुनिक भूमण्डलीकरण मुख्यतः अतीत में भारतीयों, अरबों तथा चीनियों द्वारा स्थापित ढाँचे के कारण ही संभव हुआ। आधुनिक भूमण्डलीकरण की ओर कदम प्रौद्योगिक परिवर्तनों ने भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंतराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र विश्व बैंक और विश्वव्यापार संगठन की स्थापना इस प्रक्रिया में सहयोग देने वाला एक अन्य कारक है।

भूमण्डलीकरण दो क्षेत्रों पर बल देता है:— उदारीकरण और निजीकरण। उदारीकरण का अर्थ है —

Teacher's Signature.....

औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित नियमों में ढील देना और विदेशी कंपनियों को घरेलू क्षेत्र में व्यापारिक और उत्पादन इकाईयां लगाने हेतु प्रोत्साहित करना। भूमण्डलीकरण के आधुनिक रूपों का प्रारम्भ दूसरे विश्व युद्ध से हुआ। परन्तु इसकी ओर अधिक ध्यान गत २० वर्ष में गया है। आधुनिक भूमण्डलीकरण मुख्यतः विकसित देशों के इर्द गिर्द केन्द्रित है। ये देश विश्व के प्राकृतिक संसाधनों का मुख्य भाग खर्च करते हैं। इन देशों के लोग विश्व जनसंख्या का २० प्रतिशत हैं परन्तु वे पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के ४०% (प्रतिशत) से अधिक भाग का उपभोग करते हैं।

राजनीतिक प्रभाव:— भूमण्डलीयकरण सभी प्रकार की गतिविधियों को नियंत्रित करने की शक्ति सरकार के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को देता है। जो अप्रत्यक्ष रुप से बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा नियंत्रित होते हैं। उदाहरण के लिए जब एक देश किसी अन्य देश की व्यापारिक गतिविधियों के साथ जुड़ा होता है तो उस देश की सरकार उन देशों के साथ अलग अलग समझौते करती है। यह समझौते अलग अलग देशों के साथ अलग अलग होते हैं। अब अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे विश्व व्यापार संगठन सभी देशों के लिए नियमावली बनाता है और सभी देशों को ये नियम अपने अपने देश में लागू करने होते हैं। इसके साथ ही भूमण्डलीकरण कई सरकारों को निजी क्षेत्र की सुविधा प्रदान करने के लिए कई विधाई कानूनों और संविधान बदलने के लिए विवश करता है।

सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव:→ भूमण्डलीकरण सामाजिक संरचना को भी बदलता है। अतीत में संयुक्त

परिवार का चलन था। अब इसका स्थान एकाकी परिवार ने ले लिया है। हमारी खान पान की आदतें त्योहार, समारोह भी काफी बदल गये है। जन्मदिन महिला दिवस, मई दिवस समारोह, फास्टफूड, रेस्तरांओं की बढ़ती संख्या और कई अतराष्ट्रीय त्योहार भूमण्डलीकरण के प्रतीक है। भूमण्डलीकरण का प्रभाव हमारे पहनावे में भी देखा जा सकता है।

भूमण्डलीकरण : भारतीय परिदृष्य :— स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति को चुना जिसके तहत कई बड़े उद्योग स्थापित हुए साथ ही साथ निजी क्षेत्रों को भी विकसित होने का अवसर प्रदान किया गया किन्तु कई वर्षों तक भारत अपने निर्धारित लक्ष्यों को पाने में सफल नहीं हो सका। कल्याणकारी कार्यों के लिए भारत ने अन्य देशों से ऋण लिया। 1991 ई० में भारत ऐसी स्थिति में पहुँच गया जिससे वह बाहर के अन्य देशों से ऋण लेने की विश्वासनीयता खो बैठा। अब सरकारी खर्च आय से कहीं अधिक हो गया। इसने भारत को भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को तेज करने तथा दो अतंर्राष्ट्रीय संस्थाओं विश्व बैंक और अतंराष्ट्रीय मुद्रा कोष के सुझाव के अनुसार अपने बाजार खोलने को विवश किया। सरकार द्वारा अपनाई गई रणनीति को नई आर्थिक नीति कहा जाता है। इस नीति के अंतर्गत कई गतिविधियों को जो सरकारी क्षेत्र द्वारा ही की जाती थी। निजी क्षेत्र के लिए भी खोल दिया गया। निजी क्षेत्रों को कई प्रतिबंधों से मुक्त कर दिया गया। उन्हे उद्योग प्रारम्भ करने तथा व्यापारिक गतिविधियां चलाने के लिए कई प्रकार की रियायतें भी दी गई। देशों के बाहर से उद्योगपतियों एंव व्यापारियों को उत्पादन करने तथा अपना माल और सेवाएँ भारत में बेचने के लिए आमंत्रित किया

Teacher's Signature

गया। कई विदेशी वस्तुओं को जिन्हे भारत में पहले बेचने की अनुमति नहीं थी अब अनुमति दी जाने लगी।

इस प्रकार हम पाते हैं कि भूमण्डलीकरण ने भारतीय समाज को कई रूपों में प्रभावित किया। जिसका प्रभाव भारतीय समाज में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है।